मूसा और पुरानी वाचा के नियम

पंच ग्रन्थ भाग – 3 : निर्गमन, परमेश्वर के नियम दिए जाना

(बच्चों के शिक्षक अध्ययनमाला न0 बी 2 बी 3 का अध्ययन करें)

प्रार्थना: हे प्रभु हमारी सहायता कीजिये कि हम इस्राएल को दी गई आपकी पुरानी व्यवस्था में वर्तमान काल के आपके उद्देश्य समझ सकें कि आपकी हमारे लिए क्या योजना है।

1. परमेश्वर के वचन से अपने हृदय और मष्तिष्क को तैयार कीजिये ।

निर्गमन अध्याय 19–20 पढ़ें व ज्ञात करें कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपने लोगों को अपने नियम दस आज्ञाएं जो पुराने नियम का मुख्य विषय व आधार है, ग्रहण करने के लिये तैयार किया : –

दस आज्ञाएं

मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना

मूर्ति बनाकर उन्हें दंडवत न करना, उनकी उपासना न करना

अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना

विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना

अपने माता–पिता का आदर करना

खून न करना

व्यभिचार न करना

चोरी न करना

किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना

लालच न करना जैसे घर का, पत्नी का, दास–दासी व बैल–गधे आदि का।

निर्गमन अध्याय 20:1–17 में दस आज्ञाएं खोजें, इन्हें पुराने नियम में व्यवस्था या वाचा कहा जाता है। ये मूसा द्वारा सीनै पर्वत पर दी गई थीं।

दस आज्ञाओं के संबंध में **ऐतिहासिक तथ्य :**

- परमेश्वर ने इस्राएल जाति को ये दस आज्ञाओं उस समय दीं जब वे लाल सागर पार कर मिस्र की गुलामी से छूट गये थे। उन पर बड़ी दया हुई थी इसलिये उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना था। (निर्ग 20:2)
- प्राचीन नियम में इन दस मूल आज्ञाओं सहित 612 नियम थे। इन सभी नियमोंका अब पालन करना आवश्यक नहीं जैसे : केवल येरूशलेम में ही उपासना करना, सब्त के दिन यदि कोई काम करता हुआ पकड़ा जाए तो उसे मार डालना, सब्त के वर्षो में हल न चलाना, पशुओं का बलिदान चढ़ाना आदि। पुराने नियमों की बहुत कम मान्यता नये नियम में हैं। दोनों नियमों की मूल आज्ञा प्रेम की आज्ञा है (व्यवस्था विवरण 6:4–5)। संत पौलुस ऐसे उपदेशकों की निन्दा करते हैं जो विश्वासीयों को सिखाते थे कि उन्हें

विशेष दिनों को मानना चाहिये और शुद्ध पशु ही खाना चाहिये(गलातियों 3:1–3, 4:9–11, कुलुस्सियों 2:16–17)।

- मूसा ने अपने ससुर यित्रो के परामर्श के अनुसार किया और लोगों का न्याय करने के लिये योग्य पुरूष नियुक्त किये (निर्गमन 18:24–25)। इन न्यायियों को परमेश्वर के नियम जानना आवश्यक था (निर्गमन 19:7)। एक समय इस्राएली लोग घूमते फिरते सीनै पर्वत के पास आकर तम्बू खड़े करते हैं, तो परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा दी कि वे सीनै पहाड़ पर न चढ़ें वरना मर जाएंगे। (निर्गमन 19:2–5)। केवल मूसा ही उस पर्वत पर चढ़ सकता था। परमेश्वर उस पर्वत पर महिमा व गर्जन के शब्द के साथ उस पर्वत पर उतरा, वह पर्वत कांप रहा था। (निर्गमन 19:16–20)। उस समय परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएं दीं जो पत्थर की पाटियों पर खुदी हुई थीं।(निर्गमन 24:12)।
- नये नियम में इन दस में से नौ आज्ञाओं का पालन करने के लिये प्रत्येक मसीही विश्वासी से अपेक्षा की जाती है। मसीहीयों के लिये यह आवश्यक नहीं है कि वे सातवां दिन पवित्र मानें और विश्राम करें। प्रारम्भिक कलीसियाएं सप्ताह के पहले दिन एकत्रित हुआ करती थीं (प्रेरितों के काम 20:7)। परमेश्वर ने सब्त का दिन तो नहीं बदला पर वाचा जरूर बदल दी जिसमें भिन्न प्रकार के विश्राम की लोगों के लिये प्रतिज्ञा हैं (इब्रानियों 4:3–12)। कुछ कलीसियाएं अभी भी सब्त के दिन पूर्ण विश्राम रखने की शिक्षा देती हैं।
- पुराने नियम की अन्य आज्ञाओं की भांति सब्त के दिन विश्राम की भी आज्ञा थी, क्योंकि परमेश्वर ने सृष्टि निर्माण के पश्चात सातवें दिन विश्राम किया था। (निर्ग0 20:11)। यह प्राचीन अस्थाई भौतिक संसार की ओर संकेत करता है।
- सप्ताह का पहला दिन जिसमें यीशु का पुनरूत्थान हुआ था, वह नई वाचा की नई आत्मिक सृष्टि की ओर संकेत करता है जिसने पुरानी वाचा का स्थान लिया। एक मसीही जन जब पवित्रात्मा द्वारा नया जन्म प्राप्त करता है तो इस नई अनन्त व आत्मिक सृष्टि में जन्म लेता है। (यिर्मयाह 31:31–34, 2 कुरिन्थियों 5:17)।
- परमेश्वर ने पुरानी वाचा नियमों के स्थान पर अनुग्रह की नई वाचा स्थापित की है। चूंकि यीशु ने अपने लहू में नई वाचा स्थापित की है, इसलिये यह विश्वासियों को नयी प्रकार की व्यवस्था का पालन करने का आदेश देती है। इसे स्वतन्त्रता की व्यवस्था (याकूब 1:14), विश्वास की व्यवस्था (रोमियों 3:27–28), प्रेम की व्यवस्था (गलातियों 5:14), तथा आत्मा की व्यवस्था (रोमियों 8:2–4) कहते हैं । मृत्यु की वाचा के स्थान पर आत्मा की तेजोमय वाचा स्थापित हुई। (2 कुरि0 3:7–11)
- पुरानी वाचा मृत्यु की घोषणा करती है क्योंकि कोई भी व्यक्ति उसे पूरा करने योग्य नहीं है। इस पुरानी वाचा के तीन निम्नलिखित उद्देश्य थे :–

  1) इस पुरानी व्यवस्था में सामान्य नियमों की व्याख्या दी गई थी ताकि उचित न्याय किया जा सके।

  2) इससे पाप की पहचान हुई । (रोमियों 3:19–20)

  3) व्यवस्था मसीह तक पहुंचने में शिक्षक हुई, जिसने विधियों का लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था, जो हमारी मृत्यु की घोषणा करता था, मिटा डाला, और उसे कीलों से जड़ कर सामने से हटा डाला (गलातियों 3:24–25, कुलुस्सियों 2:14–17)।

पढ़ें निर्गमन अध्याय 32 जहां परमेश्वर द्वारा मूसा को दस आज्ञाएं देने का दूसरा वर्णन पाया जाता है, और खोजें:

- परमेश्वर इस्राएलियों पर क्यों क्रोधित हुआ?
- परमेश्वर ने मूर्तिपूजकों को नष्ट न करने का निर्णय क्यों लिया?
- मूसा ने क्रोध में आकर क्या मूर्खता का कार्य पाटियों के साथ किया?

2. योजना बनायें कि अगले सप्ताह विश्वासीगण एक दूसरे की सहायता के लिये क्या करना चाहते हैं ताकि वें व्यवस्था के द्वारा नहीं वरन् पवित्रात्मा की अगुवाई में चलने की सामर्थ पा सकें।

यदि कोई विश्वासी पुराने नियम की व्यवस्था को लेकर भ्रम में है, तो उसके पास जाकर सच्चाई बताएं जिनका वर्णन इस अध्ययन में किया गया है। उन्हें बताएं कि अब मसीही विश्वासी अनुग्रह की नई वाचा के अन्तर्गत जीवन व्यतीत करते हैं। मसीही जीवन लिखित व्यवस्था से नहीं चलाया जाता है, जब हम प्रेम की व्यवस्था का पालन करते हैं और स्वतन्त्रता की व्यवस्था पर चलते हैं तो पवित्रात्मा हमें चलाता है।

यदि कोई विश्वासी पुराने नियम की व्यवस्था पर चलने को मजबूर है, व चलना ही चाहता है तो उसके लिये प्रार्थना करें कि वह व्यवस्था के दासत्व से छूट सके। रोमियों 6:14 समझने व इस पद को कंठस्थ करने में उनकी सहायता करें, जहां लिखा है, "अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।"

यदि ऐसे विश्वासी समझाने पर भी यीशु की प्रेम की व्यवस्था पर चलने की अपेक्षा पुरानी व्यवस्था पर चलना चाहते हैं तो उनके लिये पढ़ें कुलुस्सियों 2:16-17, "इसलिये खाने पीने या पर्व या नए चांद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आने वाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं।"

3. अपने सहयोगियों के साथ मिलकर अगली आराधना सभा की गतिविधियों की योजना बनाएं।

ऐसी गतिविधियों का चुनाव कीजिये जो तत्कालिन आवश्यकता एवं स्थानीय रीति-रिवाज़ों के अनुकूल हों।

परमेश्वर ने किस प्रकार इस्राएलियों को दस आज्ञाएं दी, और किस प्रकार मूसा परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि उन लोगों को वह क्षमा करे जिन्होंने उसकी दृष्टि में अपराध किया है, यह सब बताएं।

पुराने नियम की व्यवस्था के विषय में ऐतिहासिक तथ्य समझाएं (भाग - 1)

बताएं कि किस प्रकार परमेश्वर ने पुरानी व्यवस्था के स्थान पर अनुग्रह की नई वाचा स्थापित की (भाग-1)

बच्चे नाटक कविता और प्रश्नोत्तर आदि प्रस्तुत करें जो उन्होंने तैयार किए हैं।

उन योजनाओं की जानकारी दीजिये जो आपने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर बनाई हैं कि आप उन लोगों के पास जाकर भेंट करेंगे जो अभी तक पुरानी व्यवस्था के पालन करने या न करने के संबंध में संघर्ष कर रहे हैं।

सब मिलकर कंठस्थ करें: यहन्ना 1:17, "व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची।"

प्रभु-भोज विधि के लिये पढ़ें कुलुस्सियों 2:13-14। लोगों को समझाएं कि यीशु मसीह का लोहू हमें मृत्यु की व्यवस्था के श्राप से स्वतन्त्र करता है, तथा प्रभु भोज में यीशु के रक्त बलिदान को स्मरण कर आनन्द मनाया जाता है।

दो या तीन के समूहों में एक दूसरे के लिये प्रार्थनाएं कीजिए। उन योजनाओं को अंतिम रूप दीजिये जो आपने बनाई हैं कि आप ऐसे लोगों से भेंट करके उनकी सहायता करेंगे जो पुरानी व्यवस्था का पालन करने या न करने के संबंध में संघर्ष कर रहे हैं जिनका पालन करना नये नियम के विश्वासी के लिये आवश्यक नहीं है।